55C CHSL 2022





HISTORY



अब कोई प्रश्न गलत नही होगा



LIVE | 06:30 PM

BY ASHUTOSH MAHENDRAS



UPCOMING ONLINE BATCHES





www.mahendras.org • 🗘 7052477777/7052577777





H/w Q. गायत्री मन्त्र की रचना किसने की थी ?

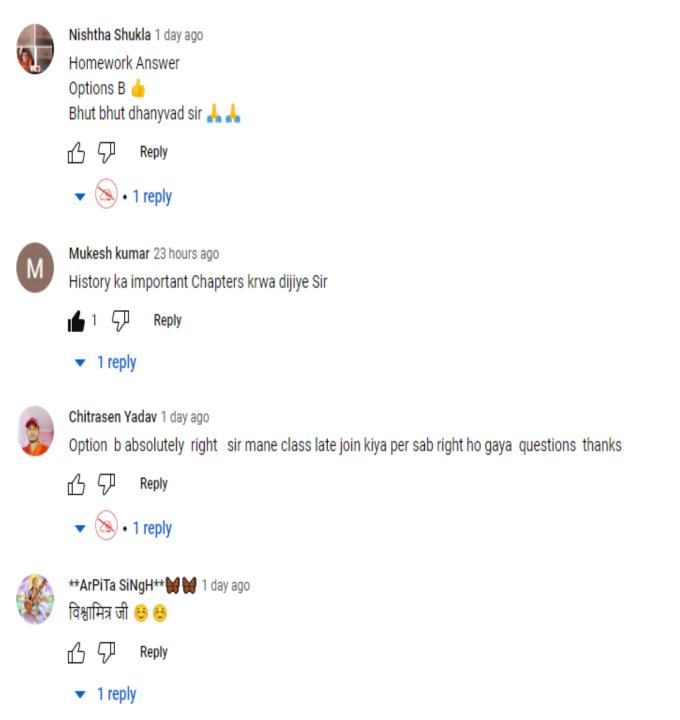
Who composed the Gayatri Mantra?

A –वशिष्ट /Vashisht

B –विश्वामित्र /Vishvamitra

C –इंद्र /Indra

D –परीक्षित /Parikshit





Gaurav's Lifestyle 1 day ago Option "B"







Zikra Yasmeen 19 hours ago Option B







CHHAVI SAXENA ## 1 day ago
Home work answer is Viswamitra

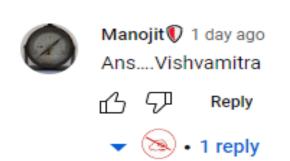


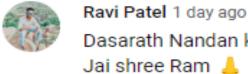




SAYAK NAYAK 1 day ago B) Vishvamitra







Dasarath Nandan ke guru Vishwamitra Jai shree Ram 👃 👃



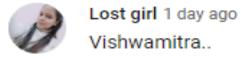




amit singh BABUAAN 1 day ago bishvamitra



▼ 1 reply







Puspranjan Singh 1 day ago В



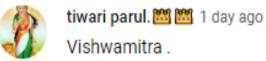




VEDANT yaduwanshi 1 day ago (edited) Vishwamitra home work ans

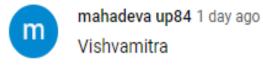


















Farooqui..... 1 day ago Vishwamitra





Reply







Suruchi Jha 1 day ago vishwamitra





Reply





▼ (3) • 1 reply



Surbhi Sinha 1 day ago Vishwamitra





Reply





mr. dileepkumar 1 day ago Vishwamitra





Reply





▼ 🖎 • 1 reply



Abhay kumar 1 day ago

Vishwamitra





Reply

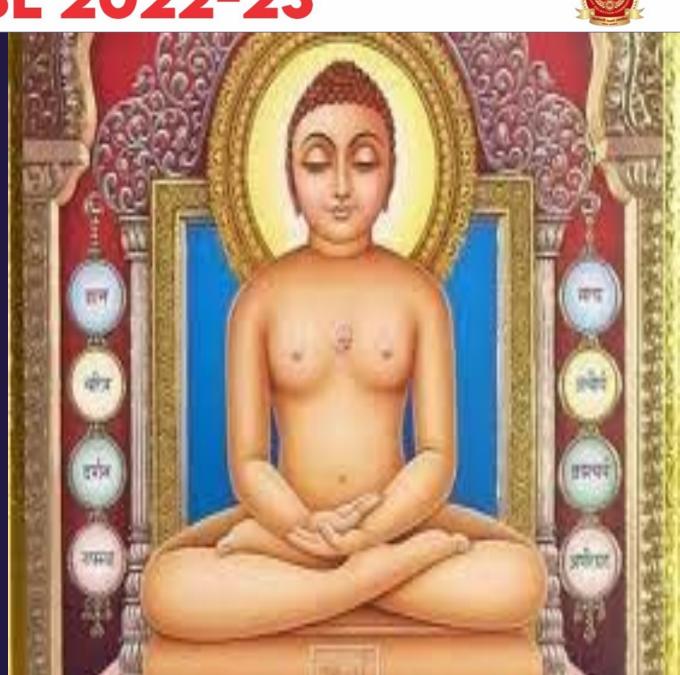






जैन धर्म

Jainism







प्रवर्तक (Founder)

- जैन धर्म के संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।
- Rishabhdev was the founder and first Tirthankara of Jainism.
- तीर्थंकर- जो स्वयं तप के माध्यम से आत्मज्ञान प्राप्त करते है और जो संसार रूप सागर से पार लगाने वाले तीर्थ की रचना करते है, वह तीर्थंकर कहलाते हैं। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए थे।
- Tirthankaras Those who attain self-knowledge through austerity and who create a pilgrimage that crosses the ocean in the form of the world, are called Tirthankaras. There were a total of 24 Tirthankaras in Jainism.





प्रमुख जैन तीर्थंकर और प्रतीक

Major Jain Tirthankaras and Symbol

क्रम (SL)	नाम(Name)	प्रतीक(Symbol)
1st	ऋषभदेव Rishabhdev	सांड Bull
23rd	पार्श्वनाथ Parshavnath	सांप का फन Snake hood
24th	महावीर स्वामी Mahavir Swami	शेर Lion





- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे।
- Parshvanath was the 23rd Tirthankara of Jainism.
- पिता अश्वसेन (काशी के राजा) /
- Father- Ashwasen (King of Kashi)
- इन्हें झारखंड के सम्मेद शिखर पर ज्ञान की प्राप्ति हुई। सम्मेद शिखर तीर्थ, भारत के झारखंड प्रदेश के गिरिडीह जिले में मधुबन क्षेत्र में स्थित है।
- He attained knowledge at the summit of Jharkhand. Sammed Shikhar Teerth is located in the Madhuban region in Giridih district of Jharkhand state, India.

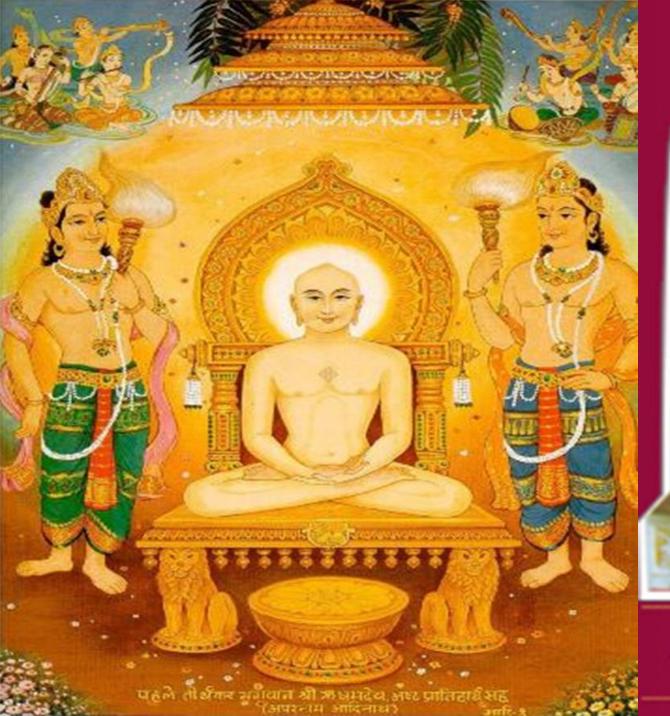
पार्श्वनाथ/

Parshvanath





- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने 4 नियम बताएं जिसे चतुरायण धर्म कहा गया।
- After attaining knowledge, he told 4 rules, which is known as Chaturayan Dharma.
- हिंसा ना करना/ do not commit violence
- सदा सत्य बोलना/ always telling the truth
- चोरी ना करना/ don't steal
- संपत्ति ना रखना/ not possessing property
- पार्श्वनाथ महावीर स्वामी से लगभग 250 वर्ष पहले हुए थे।
- Parshvanath was about 250 years before Mahavir Swami.





શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથાય નમઃ





महावीर स्वामी / Mahavira Swami

- जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं जिन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।
- The 24th and last Tirthankara of Jainism is Mahavir Swami, who is said to be the real founder of Jainism.
- सांसारिक जीवन:- महावीर स्वामी का जन्म 540 ईसा पूर्व में कुंडग्राम (वैशाली) में हुआ था।
- Worldly life:- Mahavir Swami was born in 540
 BC at Kundagram (Vaishali).





महावीर स्वामी / Mahavira Swami

- पिता:- सिद्धार्थ, पत्नी:- यशोदा, माता: त्रिशला, पुत्री:- प्रियदर्शनी, दामाद:- जमाली, भाई:- नंदिवर्धन।
- Father:- Siddhartha, Wife:- Yashoda, Mother:- Trishala, Daughter:- Priyadarshini, Son-in-law:- Jamali, Brother:- Nandivardhana
- महावीर स्वामी जी के पिता कुंडग्राम के ज्ञात्रिक वंश के राजा थे।
- Mahavir Swamiji's father was the king of Jantrik dynasty of Kundagram.





महावीर स्वामी / Mahavira Swami

- महावीर स्वामी जी के बचपन का नाम वर्धमान था।
- Mahavir Swamiji's childhood name was Vardhaman.
- 72 वर्ष (468 B.C.) की उम्र में, महावीर ने पावापुरी नामक क्षेत्र में निर्वाण प्राप्त किया।
- At the age of 72 years (468 B.C.), Mahavira attained Nirvana in the area known as Pawapuri.





आध्यात्मक जीवन Spiritual life

- महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की उम्र में माता पिता की मृत्यु के पश्चात अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से अनुमित लेकर सन्यास जीवन को स्वीकारा था। 12 वर्षों के कठिन तपस्या के बाद महावीर स्वामी जी को ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे तपस्या करते हुए ज्ञान की प्राप्ति हुई और ज्ञान प्राप्ति को "कैवल्य' कहा गया। इसी समय से महावीर स्वामी अर्हत(पूज्य), निरग्रंथ (बंधनहीन), जिन (विजेता) कहलाए।
- After the death of his parents at the age of 30, Mahavir Swami accepted the sanyasa life after taking permission from his elder brother Nandivardhan. After 12 years of hard penance, Mahavir Swami ji attained knowledge by doing penance under the Sal tree on the banks of river Rijupalika and the attainment of knowledge was called "Kaivalya". From this time Mahavir Swami was called Arhat (worshipped), Nirgranth (bondless), Jin (winner).





आध्यात्मिक जीवन (Spiritual life)

- महावीर स्वामी जी ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिए।
 इन्होंने पहला उपदेश राजगीर में दिया और अंतिम उपदेश पावापुरी में दिया।
- Mahavir Swamiji gave his sermons in Prakrit language. He gave the first sermon in Rajgir and the last sermon in Pavapuri.
- महावीर स्वामी का प्रथम भिक्षु उनका दामाद जमालि बना।
- The first monk of Mahavir Swami became his son-in-law Jamali.





महावीर के 5 सिद्धांत/

(Five Doctrines of Mahavir)

ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी जी ने कुल 5 नियम बताएं जिसे पंचायन धर्म कहा गया:

- (1) सत्य (सत्य) /Satya (Truth)
- (2) अहिंसा (अहिंसा) /Ahinsa (Non Violence)
- (3) अस्तेय (चोरी न करें) /Asteya (Do not Steal)
- (4) अपरिग्रह (संपत्ति का अधिग्रहण न करें)/ Aparigraha (Do not acquire property)
- (5) ब्रह्मचर्य महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया /Brahmacharya Added by Mahavira Swami





- सम्यक दर्शन यथार्थ ज्ञान के प्रति श्रद्धा ही सम्यक दर्शन है।
- Samyak Darshan Shraddha is the perfect philosophy of true knowledge.
- सम्यक ज्ञान सत्य तथा असत्य का ज्ञान ही सम्यक ज्ञान है।
- Samyaka Gyan -Knowledge of truth and untruth is right knowledge.
- सम्यक आचरण / चरित्र- अहितकर कार्यों का निषेध तथा हितकारी कार्यों का आचरण ही सम्यक चरित्र है।
- Samyaka Acharan/Charita –Prohibition of harmful actions and conduct of beneficial actions is the right character.

महावीर के त्रिरत्न/

Three Jewels of Mahavira





जैन संप्रदाय /Jain Sects

श्वेतांबर / Svetambara

दिगंबर / Digambara

- श्वेत वस्त्र धारण करने वाले
 - Put on white dress.

• इस संप्रदाय के नेता स्थूलबाहु थे Leader of this sect was Sthulabahu. • नग्न रहने वाले

Keep themselves naked.

• इस संप्रदाय के नेता भद्रबाहु थे

Leader of this sect was Bhadrabahu.





जैन साहित्य / Jain Literature

- मुख्य रूप से दिगंबर साहित्य और श्वेतांबर साहित्य के बीच विभाजित।
- Primarily divided between Digambara literature and Svetambara literature.
- मुख्य रूप से मगधी प्राकृत, संस्कृत, मराठी, तमिल, राजस्थानी, धुंदरी, मारवाड़ी, हिंदी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम में मौजूद हैं।
- Exists mainly in Magadhi Prakrit, Sanskrit, Marathi, Tamil,
 Rajasthani, Dhundari, Marwari, Hindi, Gujarati, Kannada,
 Malayalam.
- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है और इस साहित्य की भाषा प्राकृत है।
- Jain Literature is called as Aagam and the language of this literature is Prakrit.





जैन संगीतियां

Jain Councils





प्रथम संगीति/1st Council

• वर्ष - 300 ई.पू./

• स्थान- पाटलिपुत्र

• राजा - चंद्रगुप्त मौर्य

• अध्यक्ष - स्थूलभद्र

• कार्य - जैन धर्म के 12 अंग संपादित

किए गए। पहली जैन संगीति

में, जैन धर्म दो भागों में

विभाजित था, दिगंबर और

श्वेतांबर।

• Place- Pataliputra

• King- Chandragupta Maurya

• Chairman- Sthulabahu

Outcome- 12 Angas of Jainism

were edited. In the

first Jain Sabha,

Jainism was divided

into two parts,

Digambara and Shwetambar.





द्वितीय संगीति/2nd Council

- वर्ष 512 A.D.
- स्थान वल्लभी (गुजरात)
- अध्यक्ष देवर्षि क्षमाश्रमण / देवीरीधमानी
- कार्य जैन साहित्य अंत में संकलित

- Year 512 A.D.
- Place Vallabhi (Gujarat)
- Chairman Devarsi Kshmasrmn/
 Devridhimani
- Outcome Jain literature finally compiled





Q.1 With which religion is Kaivalya associated?

'कैवल्य' कौन-से धर्म से संबंधित है ?

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 7 सितंबर, 2016 (I-पाली)

- (a) Buddhism / बौद्ध
- (b) Jainism / जैन
- (c) Hinduism/हिंदू
- (d) Sikhism / सिख





जैन धर्म में 'पूर्ण ज्ञान' के लिए कैवल्य शब्द का प्रयोग किया गया है। महावीर स्वामी को 12 वर्षों की कठोर तपस्या तथा साधना के पश्चात जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) प्राप्त हुआ था। फलतः वे 'केवलिन' कहलाए।

In Jainism, the word Kaivalya has been used for 'absolute knowledge'. Mahavir Swami had attained Kaivalya (complete knowledge) under a sal tree on the banks of river Rijupalika near village Zrimbhik after 12 years of rigorous penance and meditation. As a result, he was called 'Kevalin'.





Q.2 According to the Jain Philosophy, the term 'Jina' means_____

जैन दर्शन के अनुसार, 'जिन' शब्द का अर्थ है।

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 7 मार्च, 2020 (III- पाली)

- (a) Lord / भगवान
- (b) The conqueror / विजेता
- (c) Free from fetters / जंजीर से मुक्त
- (d) Worthy / योग्य





जैन दर्शन के अनुसार, जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ विजेता है। जैन संस्थापकों को 'तीर्थकर जबिक जैन महात्माओं को 'निर्प्रथ' कहा जाता है। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थकर माने जाते हैं, जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार किया। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।

According to Jain philosophy, the word Jain is derived from the Sanskrit word 'Jin', which means conqueror. Jain founders are called 'Tirthankaras' while Jain Mahatmas are called 'Nirgraths'. A total of 24 Tirthankaras are considered in Jainism, who propagated Jainism from time to time. The first Tirthankara of Jainism was Rishabhdev or Adinath and the last Tirthankara was Mahavir Swami.





Q.3 In which Indian Religion, there are 24 Tirthankaras?

किस भारतीय धर्म में 24 तीर्थंकर हुए थे?

S.S.C. ऑनलाइन CHSL (T-1) 7 फरवरी 2017 (1-पाली)

- (a) Jainism / जैन
- (b) Hinduism/ हिंदू
- (c) Buddhism / बौद्ध
- (d) Sikhism / सिख





Q.4 Who is considered the first Tirthankara of Jainism?

जैन धर्म का पहला तीर्थंकर किसे माना जाता है ?

S.S.C. ऑनलाइन स्टेनोग्राफर, 13 सितंबर, 2017 (II - पाली)

- (a) Parshwanath/पार्श्वनाथ
- (b) Rishabhdev/ऋषभदेव
- (c) Mahavir Swami/महावीर स्वामी
- (d) Ajitnath/अजितनाथ





Q.5 Lord Mahavira was born in present-day state of _____.

भगवान महावीर का जन्म वर्तमान समय के _____राज्य में हुआ था।

S.S.C. JE इलेक्ट्रिकल परीक्षा 10 दिसंबर, 2020 (II- पाली)

- (a) Punjab / पंजाब
- (b) Gujarat / गुजरात
- (c) Maharashtra/महाराष्ट्र
- (d) Bihar / बिहार





Q.6 Mahavira, who was known in Pali literature as Nighantha Nataputta, founded a religion called_____.

महावीर, जिन्हें पाली साहित्य में निघंता नाटापुत्त से जाना जाता है, ने ____ नामक धर्म की के नाम

स्थापना की थी।

S.S.C. ऑनलाइन CGL (T-I) 17 अगस्त, 2021 (III-पाली)

- (a) Sikhism / सिख धर्म
- (b) Bahai / बहाई धर्म
- (c) Zoroastrianism/पारसी धर्म
- (d) Jainism/जैन धर्म





- महावीर, जिन्हें पाली साहित्य में निघंता नाटापुत्त के नाम से जाना जाता है। महावीर स्वामी जैन धर्म में 24वें तीर्थंकर थे, जबिक जैन धर्म की स्थापना ऋषभदेव ने की थी।
- Mahavira, who is known as Nighanta Nataputta in Pali literature. Mahavir Swami was the 24th Tirthankara in Jainism, while Jainism was founded by Rishabhdev.





Q.7 Where did Lord Mahavira attain salvation?

भगवान महावीर को मोक्ष निम्न में से किस स्थान पर प्राप्त हुआ था ?

S.S.C. ऑनलाइन M.T.S. (T-I) 13 अक्टूबर, 2021 (II- पाली)

- (a) Pawapuri/पावापुरी
- (b) Shravanabelagola / श्रवणबेलगोला
- (c) Sonagiri/ सोनागिरि
- (d) Mount Abu/माउंट आबू





जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी का मोक्ष स्थान (निर्वाण) पावापुरी में स्थित है। भगवान महावीर ने 527 ई.पू. अर्थात 72 वर्ष की आयु में बिहार के पावापुरी में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त हुआ। The place of salvation (Nirvana) of Mahavir Swami, the originator of Jainism, is situated in Pawapuri. Lord Mahavira in 527 B.C. That is, at the age of 72, he attained Nirvana (salvation) on Kartik Krishna Amavasya in Pawapuri, Bihar.





Q.8 A collective term used by the Jains for their sacred books is-

जैनियों द्वारा अपने पवित्र ग्रंथों के लिए सामूहिक किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?

S. S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 10 सितंबर, 2016 (I-पाली)

- (a) Prabandhas / সুৰ্ভা
- (b) Nibandhas / निबंध
- (c) Angas/अंग
- (d) Charits/चरित





- प्रायः सभी प्रारंभिक धार्मिक जैन साहित्य (आगम) प्राकृत की विशिष्ट शाखा अर्ध-मागधी भाषा में लिखा गया है। इसके बारह अंग अर्ध-मागधी में ही हैं। बाद में जैन धर्म ने प्राकृत भाषा को अपनाया। जैनियों द्वारा अपने पवित्र ग्रंथों के लिए सामूहिक रूप से अंग शब्द का प्रयोग किया था।
- Almost all early Jain religious literature (Agama) is written in the Ardha-Magadhi language, a distinct branch of Prakrit. Its twelve parts are in Ardha-Magadhi only. Later Jainism adopted the Prakrit language. The term Anga was used collectively by the Jains for their sacred texts.





Q.9 What is the compilation of the teachings of Lord Mahavira called?

भगवान महावीर की शिक्षाओं के संकलन को क्या कहा जाता है?

S.S.C. ऑनलाइन कांस्टेबल GD 2 मार्च, 2019 (I- पाली)

- (a) Shruti Sutra/ श्रुति सूत्र
- (b) Agama Sutra/अगम सूत्र
- (c) Piebi Sutras /पिबी सूत्र
- (d) Avesta Sutras/अवेस्ता सूत्र





- भगवान महावीर की शिक्षाओं के संकलन को 'अगम सूत्र' कहा जाता है। भगवान महावीर के उपदेश को उनके शिष्यों द्वारा कई ग्रंथों (शास्त्रों) में संकलित किया गया था, जिन्हें जैन आगम या अगम सूत्र के नाम से जाना जाता है।
- The compilation of the teachings of Lord Mahavira is called 'Agam Sutra'. The teachings of Lord Mahavira were compiled by his disciples into several texts (scriptures), known as the Jain Agamas or Agama Sutras.





Q.10 The famous Dilwara temples of Mount Abu are a sacred pilgrimage place for the-

माउंट आबू स्थित मशहूर दिलवाड़ा मंदिर निम्नलिखित में से किस समुदाय का पवित्र तीर्थस्थल है ? S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 1 सितंबर 2016 (I-पाली)

- (a) Buddhists / बौद्ध
- (b) Jains / जैन
- (c) Sikhs / सिक्ख
- (d) Parsis / पारसी





- माउंट आबू, सिरोही (राजस्थान) स्थित मशहूर दिलवाड़ा मंदिर जैन धर्म का पवित्र तीर्थस्थल है। इनमें सबसे प्रसिद्ध विमल वासाही मंदिर है। चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम (1022-1064 ई.) के सामंत विमलशाह ने इसे बनवाया था। माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर संगमरमर के बने हैं।
- The famous Dilwara Temple at Mount Abu, Sirohi (Rajasthan) is a holy pilgrimage center of Jainism. The most famous of these is the Vimal Vasahi Temple. It was built by Vimalshah, a feudatory of Chalukya ruler Bhimdev I (1022-1064 AD). The Dilwara Jain temples of Mount Abu are made of marble.





Q.11 Chalukya temples (Jain temples) at Dilwara are situated in-

दिलवाड़ा के चालुक्य मंदिर (जैन मंदिर) कहां स्थित हैं ?

S.S.C. ऑनलाइन स्नातक स्तरीय (T-I) 29 अगस्त, 2016 (I- पाली)

- (a) Madhya Pradesh/मध्य प्रदेश
- (b) Uttar Pradesh / उत्तर प्रदेश
- (c) Rajasthan/ राजस्थान
- (d) Haryana / हरियाणा